समकालीन कथा साहित्य में महिला उपन्यास लेखिकाओं के विविध आयाम

डॉ० सुनीता शर्मा

ऐसो0 प्रोफे0, हिन्दी विभाग, प्रेमचन्द मार कण्डा एस.डी. कालेज फॉर वूमैन, जालन्धर शहर

सारांश

साहित्य किसी भी जाति का समाज की सृजनशीलता का सर्वोत्तम परिचायक होता है। साहित्य के माध्यम से अपने समय में दुनियां से परिचित और गढ़ने का प्रयास जाति करती है और इसी से सभ्यताओं और सांस्कृतियों का निर्माण होता है। साहित्य एवं कलाओं के समक्ष चुनौतियों का अर्थ है मानव की सृजनशीलता के समक्ष समकाल में क्या चुनौतियाँ होगी? यह शती सामान्य नहीं है क्योंकि विगत दो–तीन दशकों से हमारा भावबोध, रंगरूप इतनी तीव्र गति से बदला है कि मानव की अपनी सृजनशीलता को लेकर चिंतित होना स्वाभाविक है।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:

डॉ० सुनीता शर्मा

समकालीन कथा साहित्य में महिला उपन्यास लेखिकाओं के विविध आयाम

शोध मंथन, जून 2018,
पेज सं0 112–116

Article No. 16
http://anubooks.com
?page_id=581

आधुनिक हिन्दी साहित्य पिछले दो–तीन दशकों से महिला लेखन में अत्यधिक उभार आया है। पीछे काफी समय से कथा साहित्य लेखन में महिला उपन्यास लेखिकाओं का रूप उभर कर प्रत्यक्ष आया है वह आज पुरुषों से कहीं अच्छा है। महिला उपन्यास लेखिकाओं की रचनाओं में जीवन की कारुणिक कथा का बोध दिखाई देता है। समकालीन हिन्दी कथा साहित्य में महिला कथाकारों द्वारा अलग–अलग विधाओं–कहानी, नाटक, उपन्यास, डायरी, निबन्ध, रिपोतार्ज आदि हर विधा पर लिखा जा रहा है। आज नारी पुरुषों से कदम मिलाकर चल रही है। समकालीन महिला उपन्यास लेखिकाओं में मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा, अनामिका मैत्रेयी, कृष्णा सोबती, कुसुम अंसल, कौशल्या वैसत्री, स्नेहमायी चौधरी, प्रभा खेतान, रमणिका गुप्ता, सुधा अरोड़ा, गीताजंलि, अलका सरावगी, जयंती महुआ मांक्षी, पदमा सचदेवा, पुष्पा, जया जादवानी आदि लेखिकाएँ है। इन कथाकारों के उपन्यासों में नारी जीवन का संघर्ष, समाज में अपनी उपस्थिति एवं मिथकों का विरोध किया है। इन कथाकारों के उपन्यासों में भ्रष्टाचार, महंगाई समस्या, शिक्षा की समस्या, असफल प्रेम विवाह, शोषण, अर्थाभाव, बेरोजगारी की समस्या अन्धविश्वास, रूढिवादी विचारधारा, महानगरीय समस्या, अवैध सम्बन्ध, दहेज, आदि चित्रण है उनके साहित्य में देखे जाते हैं। महिला उपन्यास लेखन में उनके द्वारा मातृत्व, प्रेम, समाज में प्रतिष्ठा से जीवन व्यतीत करने की अभिलाषा, सशक्त आर्थिक स्थिति, समस्त जीवन संघर्षमय आदि प्रमुखतः देखने को मिलते हैं। एक ओर उपन्यास में प्रेम छलावा होकर बल्कि सच्चे प्रेम के दास्तान की कहानी करुणामय कहानी कथा होती है। क्योंकि ऐसा प्रेम नारी के अतीत, वर्तमान और भविष्य से जुड़ा होता है। महिला उपन्यासकारों ने सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में भी उपन्यास लिखे। 'मृदुला गर्ग' का 'चित कोबरा' उपन्यास खुलेपन के लिए भी समाज में नई सोच को जन्म देती है। 'राजा सेठी' का 'तत्सम' उपन्यास भारतीय समाज में एक विधवा युवती वसुधा के अपने ही समान धर्म की खोज की कथा है। 'प्रभा खेतान' तो मरुस्थल की तरह जैसे संवेदनशील अमेरिकी समाज में भी मानव से अलग कुमो– पेपे में संवेदनशीलता की तलाश करती है–'आओ पेपे घर चले' में लेकिन उनकी प्रमुख रचना–शैली मारवाड़ी समाज की नारी का आत्म संघर्ष है। 'मैत्रेयी पुष्पा' का 'बेतवा बहती रही' बुन्देलखण्ड की पृष्ठभूमि में बेतवा के कछारी क्षेत्र में साधारण नारी के उत्पीड़न और यातना के सन्दर्भों को उद्घाटित करती है। 'नरक दर नरक' में ममता जी ने भारतीय समाज में विभिन्न, प्रान्तीयता वर्णों में बंटे समाज को नरक की ओर धकेलता है। 'नासिरा शर्मा' नारी की स्थिति का एक व्यापक फलक पर पारिभाषित करती है। नासिरा का पहला उपन्यास 'सात नदियां' एवं समुन्द्र ईरान के आधुनिक इतिहास में सबसे तलख और खूनी दौर की पृष्ठभूमि में स्त्री के उत्पीड़न के विभिन्न रूपों का आंकलन प्रस्तुत करता है। महिला उपन्यासकार में घर परिवार ही नहीं अपितु इसके साथ ही समाज का विशाल कैनबस भी प्रतिफलित है। मन्नु भण्डारी का 'महाभोज' का 'जिन्दगी नाम', 'महाश्वेता देवी' का 'जंगल के दावेदार', 'प्रभा खेतान' का 'छिन्न मस्ता', 'नासिर शर्मा' का 'जिन्दा मुहावरे', 'चित्रा मुद्गल' का 'आंवा', कुर्रतुल ऐन हैदर का 'आग का दरिया' आदि रचनाएँ उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है।

डॉ० शशिकला त्रिपाठी ने टिप्पणी करते हुए कहा है– हिन्दी में नारी लेखन का साहस का अभाव नहीं है। 'तसलीमा नसरीन' जैसा साहस भी नहीं दिख पड़ता। सही मायने में नारी मुक्ति

की यात्रा अभी भी अधूरी है। सदियों की परम्पराओं, अन्धविश्वासों, रूढ़ियों से स्वतन्त्र नहीं हो सकी। आज भी समाज में पुरुषों का वर्चस्व रहा है। आज तक वह भोग्या या पुरुषों की सम्पत्ति बनी हुई है। उनके शोषण से भारतीय समाज का अस्तित्व बना हुआ है। लेकिन अब समय परिवर्तित हो गया है। समाज के प्रतिमान बदले हैं और अपनी अस्मिता, अस्तित्व के प्रति सजग हुई है। इस प्रकार अपने उत्थान में जो नवीनतम शैली का प्रयोग अपने उपन्यासों में किया है। उसमें उनके वर्चस्व की झांकी दिखाई देती है। 'ऊषा प्रियंवदा' ने 'पचपने खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास में परिवार की स्वार्थ परकता पर तथा एक कमाऊ बेटी सुषमा के अन्तर्मन की मनोदशा की पीड़ा का अत्यधिक मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। किस प्रकार सुषमा के सभी आकांक्षा सुख परिवार के निजी स्वार्थता पर बलिदान हो जाते हैं। वह हार कर प्रेमी नील से कहती है कि–मेरी जिन्दगी खत्म हो चुकी है, मैं केवल साधन हूँ मेरी भावना का कोई स्थान नहीं। मैंने अपने को ऐसी जिन्दगी के लिए ढाल दिया है। 'मंजुल भगत' के 'अनारो' उपन्यास की नायिका अनारो वैवाहिक जीवन का संताप भोगती है और प्रेम के चन्द क्षणों के लिए तरसती है। पत्नी का सर्वस्व उसका पति ही होता है। पति की उपेक्षा पत्नी के लिए असहनीय है कि अपने ही मन को अनारो खुद ही यह कहते मनाती है कि–हे गंजी के बाप, एक तू मेरा न हुआ तो क्या जहान भी मेरा नहीं? अनारो को दुलारने वाले भी है। महिला उपन्यास लेखन के बारे में 'मधुरेश' कहती है–समय ने सोच का दायरा बढ़ाया है नई नस्ल को खत्म करने की उनकी साजिश, कलम, आवाज, कागज जैसे विचारों को सलीब पर चढ़ाने का उनका प्रयास दूसरों की तरह इनके दिलों में भी एक स्वच्छ कब्र बनाती है।

'मधु कांकरिया' का उपन्यास 'सेज पर संस्कृत' जैन समाज की युवा साहित्यों का जटिल वृतांत है। मां के दबाव में छोटी बहन केश कटाकर साध्वी बन जाती है पर वही विद्रोह कर विवाह के बहाने गिरिस्तान हो जाती है। युवा उपन्यासकार 'मछुआ मांक्षी' का उपन्यास 'मैं बोरिशाइल्ला' विभाजन का महाअभियान बन शंखनाद करती दिखाई देती है। 'वांडमय पत्रिका' में लिखा गया है कि–'सदियों से उत्पीड़ित, अपराधी मानो जाने वाली जनजातियों के शोषण को अंतहीन कथा और राजनीति में सक्रिय भागीदारी की स्वाभाविक महत्वाकांक्षा का माइक्रोस्कोपिक ब्यौरा जानना होता हो तो 'मैत्रेयी पुष्पा' की 'अल्मा कबूतरी' पढ़ना पड़ेगा। बावरी मस्जिद विध्वंस की प्रतिक्रिया स्वरूप इस्लामी देशों में अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर ढाये जाने वाले अत्याचारों का अत्यधिक प्रमाणिक विवरण जानने के लिए 'तस्लीमा नसरीन' का उपन्यास 'लज्जा' से सही विकल्प और दूसरा नहीं हो सकता। महिला उपन्यास लेखिकाओं की नायिकाएँ जब अपनी पहचान के लिए संघर्ष करती है तो परिवार और विवाह, संस्था से विद्रोह करती है तो वे केवल उस वर्चस्व वाद से विद्रोह नहीं कर रही होती है। अपितु परम्परा से चली आ रही इन तमाम गलत रूढ़ियों मारवाड़ी धनिकों की कोठियों के अन्दर की नाटकीय गलाजतो, क्षुद्रताओं ऐय्याशों और उप–निवेशकवादी कुठाओं से भी संघर्ष करती है। पत्रकार गीता समाज के लोगों से पूछती है–जब स्त्री कलम उठाती है पुरुष परेशान हो जाते हैं। उनका अहम् घायल होता है और स्त्री की बरबादी से जीने और समान अवसर पाने की आकांक्षा में उन्हें प्रवेश समीक्षा में भी बगावत के स्वर सुनाई देते हैं। परिणामस्वरूप वह रिऐक्ट करती है। हिंसा पर उतारू हो जाते हैं और एक तरह से बगावत को

कुचलने वाली मुद्रा में आ जाते हैं। उन्हें आइना न पसन्द है और अगर नारी दिखाए तो वह उनके विवेक का बांध टूट जाता है।

आज समकालीन महिला उपन्यास लेखिका देख ही नहीं रही सम्प्राण लिख रही है कि उनकी राय में समझ में पुरुष क्या देख रहा है। वह यह भी देख और सिख रही है कि पुरुषों में वे खुद क्या–क्या देख रही है? या क्या–क्या देखती रही है? जैसे–जैसे नारी उपन्यास लेखन रचनात्मक और आलोचनात्मक स्तर पर नारियों के लिए अत्यधिक चेतना लाने का काम करेगा। उसी अनुसार स्त्री का दासता से मुक्ति मिलेगी। महिला उपन्यास लेखिकाओं का मूल स्वर प्रति शोधात्मक नहीं है यह स्त्री की मुक्त कामना, बराबरी, सामाजिक न्याय, स्वबोध और अस्मिता का ही स्वर है। स्त्री विमर्श यह मानकर चलता है कि नारी अधिकार एवं स्वरबोध के विपक्ष में खड़े होने के लिए जिम्मेदार पुरुष नहीं है अपितु पितृ सतात्मक सिद्धान्तों पर आधारित वह व्यवस्था है। डॉ० फैसिदा बीजापुरे कहती है–'पहले पहल तो महिला साहित्यकारों के विषय सीमित परिधि के अन्दर अर्थात् केवल महिलाओं की समस्याओं उनका शोषण आदि का चित्रण करने तक ही सीमित परन्तु जैसे–जैसे नारी शिक्षा का प्रचार–प्रसार होता गया है वैसे ही विषयों में विविधता आती चली गयी। उनके विषय केवल स्त्री तक या घरेलू तक सीमित नहीं रहकर समाज की अन्य समस्याओं की ओर भी गया और उन्होंने उनको भी अपने साहित्य कृतियों में उतारे। 'मृणाल पाण्डे' ने 'अपनी गवाही' में स्त्री पत्रकार की और से सामाजिक स्वार्थ की जटिलताओं का उद्घाटन किया है। 'पटरंग पुराण', 'मृणाल पाण्डे' जी की एक उत्कृष्ट रचना है जिसमें समाज के सामने कई प्रश्न खड़े कर दिये हैं। वे लिखती हैं कि 'नारीवाद' आन्दोलन की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि सारे शोर शराबे के बीच नारी उत्पाद में ढ़ल और बदल रही है। 'अलका सारावगी' का नया उपन्यास' एक ब्रेक के बाद' कॉरपोरेट समाज की आपाधापी में फंसे उच्चवर्गीय समाज के अर्न्तविरोधों की कथा है।' प्रौढ़ और अवकाश प्राप्त के० वी० शंकर अय्यर के पास जॉब के नए क्षेत्र हैं अब सरकार से महत्वपूर्ण है, मल्टीनेशनल कम्पनियां। यह वह भूरमण्डीकरण है जिसमें स्थानीयताएं गुम है। जब तक नारी लेखन अन्याय अत्याचार का प्रतिरोध नहीं करती नारी की सुरक्षा के लिए संघर्ष नहीं करता तब तक स्थितिवाद क्या है ?

नया ज्ञानोदय में लिखा गया है कि–'साहित्य में स्त्री का वही रूप सामने आता है जो संस्कृति और समाज द्वारा स्वीकृत किया हुआ होता है और फिर यही स्त्री का प्रवृत और सामाजिक स्वरूप बन जाता है। उपन्यास में वास्तविकता जीवन का जो चित्र महिला लेखिकाओं ने उभारा है वह व्यक्ति के बहुत ही पास है। उपर्युक्त सभी बातों पर विचार विमर्श करने के बाद यही कहा जा सकता है कि महिलाएँ स्वतन्त्रोतर के बाद प्रत्येक दिशा में अपने शाखाओं को सशक्त कर रही है। समकालीन कथा साहित्य में महिला उपन्यास लेखिकाओं की उपस्थिति प्रत्येक दशा चाहे वह राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि हो वह अपना वर्चस्व सुदृढ़ कर रही है और अपनी सहभागिता को सुदृढ़ कर समाज की स्थिति को सुधारने में देश को एक नई दिशा देने में अपनी अहम् भूमिका निभा रही हैं। जब तक महिला उपन्यास लेखिकाएं स्वयं अपनी लेखनी में प्रदत्त सामाजिक भूमिका के विरुद्ध प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त करेगी तब तक अपनी सामाजिक स्थिति के प्रति सहनशील बनी रहेगी तब तक वे स्वतन्त्रता की अनुभूति अनुभव नहीं कर सकेगी।

अत्याचार और शोषण से मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकेगी। अति आवश्यक है कि घर से बाहर अपने कदम निकाले और आत्म सम्मान आत्म निर्भर बने। समकालीन कथा साहित्य में महिला उपन्यास लेखिकाओं की उपस्थिति एवं सहयोग से यह सिद्ध करे कि समाज में जटिल प्रश्नों के प्रति वे अत्यन्त संवेदनशील है। समय के साथ ही स्पष्ट सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक में आए परिवर्तन में इन महिला उपन्यास लेखिकाओं ने बड़ी सूक्ष्मता से पकड़ा है आज स्त्री समाज में नारी की स्थिति सुदृढ़ता के चरमोत्कर्ष पर पहुंच रही है और भविष्य में भी उनकी यह उपस्थिति देश के हित में रहेगी।'

आज के साहित्य के कोलाहल में उसे अपने निर्मल, अनासक्त, स्वरूप की ही आवश्यकता है नारी सौन्दर्य के प्रेम और प्रेम में अनन्यता होती है? यह अनन्यता ही आनन्द विधायिनी शक्ति है। नारी में आनन्द की परम अभिव्यक्ति है। वह श्री है और चिति है। उसने सृजन और प्रलय की शक्ति है नारी भविन्त और श्रद्धा है। पुरुष यति बुद्धि का प्रतीक है तो नारी ह्रदय की दोनों एक दूसरे के पूरक है। आज के हिन्दी साहित्य में नारी के उस ह्रदय का परिचय प्राप्त करना है। जो पुरुष के समस्त बौद्धिक व्यापारों को लोक हित साधन में प्रवृत्त कर सके। भविष्य निर्माता नारी आदि अपने सुन्दर सौम्य सृजन रूप के बिखरे श्रृंगार का पुनः धारण कर सके तो भविष्य का साहित्य आश्वस्त हो सकेगा।

सन्दर्भ

1. श्रीमती सरला दुआ, *आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी,* पृ० **56**
2. डॉ० अलका प्रकाश, *नारी चेतना के आयाम,* पृ० **23**
3. डॉ० शशिकला त्रिपाठी, *उत्तरशती के उपन्यासों में स्त्री,* पृ० **13**
4. मधुरेश, *हिन्दी उपन्यास का विकास,* सुमित प्रकाशन, पृ० **47**
5. ऊषा प्रियवंदा, *पंचपन खम्भे लाल दीवारें,* पृ० **61**
6. मंजुल भगत, *अनारो,* पृ० **41**
7. संजय गुप्ता *स. पा. पुनर्नवा,* पृ० **72**
8. ममता कालिया, *कृतित्व एवं व्यक्तित्व,* पृ० **102**
9. रवीन्द्र कालिया, *स. पा. नया ज्ञानोदय,* पृ० **13**
10. संजय गुप्ता, *स. पा. पुनर्नवा,* पृ० **73**
11. डॉ० एम० फिरोज अहमद *स.पा., वाड़्मय,* पृ० **66**